।। अर्हम् ।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति,श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)

दूरभाष : 01565–224600,224900

ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

चित्र से चरित्र का निर्माण होता है – युवाचार्य महाश्रमण

–अंकित सेठिया (मीडिया सहसंयोजक)–

श्रीडूँगरगगढ़ 18 फरवरी : युवाचार्य महाश्रमण ने श्रीमद् भागवत् गीता एवं जैनागम उत्तराध्ययन पर तुलनात्मक प्रवचन के दौरान दैवीय संपदा और आसूरी संपदा की चर्चा करते हुए उपरले तेरापंथ भवन के समवसरण में कहा कि दैवीय संपदा मोक्ष का हेतु बनती है और आसुरी संपदा बंधन का हेतु बनती है। जितनी जितनी शुभता आती है उतना ही मोक्ष नजदीक होता जाता है। अशुभता के कारण संसार चक्र में परिभ्रमण करते रहते हैं। जैन दर्शन के नौ तत्त्वों में संवर और निर्जरा को दैवीय संपदा और आश्रव को आसुरी संपदा माना जा सकता है। आसुरी संपदा वाले व्यक्ति को दैवीय संपदा से युक्त बनाया जा सकता है। उन्होने कहा कि, सज्ज्नों की संगत करने से दैवीय संपदा बढ़ती है और दुर्जनों की संगत से आसुरी संपदा वृद्धिंगत होती है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि संत गंगा की धार के समान होते हैं। उनकी संगती गुणों के विकास में सहायक होती है। पाव घड़ी भी साधु की संगत करने से कोटी पापों का नाश हो जाता है। उनकी सच्ची भक्ति करने से तीर्थ यात्रा से भी ज्यादा लाभ मिल जाता है। उन्होने चरित्र निर्माण में साहित्य और मीडिया की भी महत्वपूर्ण भूमिका बताते हुए कहा कि चित्र से चरित्र. का निर्माण होता है। मीडिया में दिखाये जाने वाले अश्लील दृश्यों को देखने से बचना चाहिए। चित्र से मनोभावों पर असर पड़ता है और असद् चरित्र का निर्माण हो सकता है।

सप्त दिवसीय जैन विद्या कार्यशाला 20 से

आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् के द्वारा सप्त दिवसीय जैन विद्या कार्यशाला का आयोजन उपरले तेरापंथ भवन में किया जायेगा। उक्त जानकारी देते हुए मीडिया सहसंयोजक अंकित सेठिया ने बताया कि इस कार्यशाला में जैन विद्या के विभिन्न विषयों पर विशेषज्ञ मुनिजनों के द्वारा विवेचन प्रस्तुत किया जायेगा। युवाओं के लिए विशेष तौर रात्रि में 8 से 9 बजे तक आयोजित इस कार्यशाला में वक्ताओं के द्वारा उनकी जिज्ञासाओं का समाधान भी किया जायेगा। इसमें भाग लेने वाले संभागियों को अहिंसा नगर स्थित आवास कार्यालय में पूर्व सुचित करना होगा।

अंकित सेठिया
मीडिया संयोजक/सहसंयोजक